रामायण : एक प्रसंग

सौम्या अग्रवाल
मनोविज्ञान ऑनर्स द्वितीय वर्ष
चितकारा यूनिवर्सिटी, राजपुरा पंजाब।
दूरभाष – 9053708304

उत्तर प्रदेश की पावन नगरी अयोध्या जिसका नाम
भक्ति–भाव बसा कण–कण में रग–रग में सबके राम
राम भक्त तो हुए अनेक पर सीता माता की भी तो सुनो कहानी
वह नारी थी देवी का रूप, बात है ये सदियों पुरानी
काट रहे थे वनों में दिन , चौदह वर्षों की थी बात
अनुज लक्ष्मण और माता सीता भी थे प्रभु श्री राम के साथ
एक दिन था ऐसा आया
माँ सीता के मन को स्वर्ण मृग था भाया
लक्ष्मण–रेखा की प्रतिभा को तोड़ , साधु की करनी चाही सहायता
साधु के भेस में था कपटी रावण, आख़िर ये कौन था जानता
असुरक्षित एक नारी को जान, अधर्म वो कर बैठा
सीता माता को वायु विमान में बांध लंका जा पहुँचा
माता सीता का बचाने सम्मान
गरूड़ राज जटायु ने भी न्योछावर किए अपने प्राण
अधर्मी भले ही था रावण पर सीता माँ को ना उसने छुआ
माता के रहने का अशोक वाटिका में सम्पूर्ण प्रबंध था हुआ
त्रिजटा ने ली सीता माँ की शरण, समझा उनका दर्द
राक्षसनी होकर भी मानवता का निभाया फ़र्ज़
इधर राम सुध–बुध खो बैठे, पत्नी के वियोग में हो उठे चिंतित
रावण के विनाश के आरम्भ से इस प्रकार हुए हम सब परिचित
सतयुग के रावण को तो सब दानव हैं कहते
बेख़बर इस बात से कि कलयुग में हर गली में रावण हैं रहते
न दस उनके शीश हैं ना ज्ञान का है सागर
पर हर माता–पिता और पति का ध्यान है फिर भी नारी की रक्षा की
ओर एकाग्र
संभव होगा बुराई का अंत हर रावण के दहन से
पर कलयुग में क्या तब भी रह पाएगी सीता राम संग चैन से?